चैतन्य लहरी

1991

हिन्दी आवृत्ति

बुरा मानना सहज्योगियों का लक्षण नहीं है । सहज्योगियों को तो किसी भी चीज़ का बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि आप बुरे हैं ही नहीं तो आप बुरा कैसे मान सकते हैं ।

विषय - सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	जन्म दिवस पूजा श्री माता जी निर्मला देवी मुम्बई 21-3-91	1
2.	जन साधारण कार्यक्रम श्री माता जी निर्मला देवी का भाषण मुम्बई मार्च 1991	6
3.	राम नौमी पूजा - कलकत्ता 25-3-91	13

जन्म दिवस पूजा
श्री माता जी निर्मला देवी
मुम्बई -21-3-91

सारे विश्व मे आज हमारे जन्म दिन की खुशियाँ मनाई जा रही है । यह सब देखकर जी भर आता है । आज तक किसी भी बच्चों ने अपनी माँ को इतना प्यार नही दिया होगा जितना आप मुझे देते है । ये श्री गणेश की महिमा है जो अपनी माँ को सारे देवताओ से भी ऊँचा समझते थे और उनकी सेवा मे लगे रहते थे । इस लिये वे सर्व सिद्धि प्राप्त कर गये । यह तो नैसर्गिक है कि हर माँ को अपने बच्चों से प्यार होता है और वह अपने बच्चों के लिये हर तरह का त्याग करती है । और उसे उनसे कोई अपेक्षा भी नही होती । लेकिन हर माँ चाहती है कि मेरा बेटा चारित्रवान हो, नाम कमाये, पैसा भी कमाये । इस तरह की एक सांसारिक माँ की इच्छाये होती है । लेकिन आध्यात्मिक माँ का स्थान जो आपने मुझे दिया है मुझे तो कोई भी इच्छा नही । मै सोच रही थी कि मै कौन सी बात कहूँ क्योकि मुझे कोई इच्छा नहीं । शायद इस दशा मे कोई इच्छा न रह जाये । लेकिन बगैर इच्छा किये ही यदि सब कार्य हो जाये, इच्छा के उद्भव होने से पहले ही आप सब कुछ कर रहे है तो मैं और किस चीज की इच्छा करूँ ? जैसा मैने चाहा था और सोचा था, मेरे बच्चे अत्यंत चारित्रवान, उज्ज्वल स्वभाव, दानवीर, शूरवीर, सारे विश्व का कल्याण का करने वाले - ऐसे व्यक्तित्व वाले महान गुण होंगे । सो तो मै देख रही हूँ कि हो रहा है किसी मे कम हो रहा है, किसी मे ज्यादा हो रहा है । दुनियाँ भर घूमकर, दुनियाँ भर मे जा जा कर संसार के सब प्राणियो मे उद्धार देने का कार्य भी मै देख रही हूँ कि हो रहा है । कितने ही लोग कला मे उतर गये कवि हो गये और जितने भी गुण उनके पास थे उनका प्रयोग सहजयोग के कार्य मे हो रहा है । कुछ कहना नहीं पड़ा कुछ बताना नही पड़ा । सब लोगो ने ना जाने कैसे उस बात को ले लिया कि हमें सहजयोग को फैलाना है ।

सहजयोग को फैलाने मे कोई कठिनाई भी नही होना चाहिये क्योकि आप आशीर्वादित है, ऐसे आशीर्वाद किसी भी सन्तो को नही मिले । सन्तो ने तो बहुत तकलीफें उठाई । आप के लिये कोई तकलीफ नहीं । लेकिन आप के अन्दर अनन्त शक्तियाँ हैं । उन सब शक्तियो को जान लेना चाहिये, उन शक्तियो को पूरी तरह से उपयोग मे लाना चाहिये । जब तक आप उन्हे उपयोग नहीं करेंगे तो जैसे एक मशीन यदि आप उपयोग मे न लाये तो सड़ जाती है, ये शक्तियाँ भी सड़ जायेंगी । ये शक्तियाँ आप मे जागृत हुई है और जागृति से ही किसी किसी मे तो इनका बहुत ज्यादा प्रादुर्भाव है और वो कार्यान्वित भी है । पर इसके लिये हमें क्या करना चाहिये ? ऐसा अगर आप मुझसे पूछे तो वो मैं आपसे बताना चाहती हूँ ।

सबसे पहले हमें अपनी ओर नजर करनी चाहिये कि हम सहजयोग के लिये क्या कर सकते हैं । सुबह से शाम तक हम बस हमारे बच्चे, हमारा घर-बार, यही कुछ हम करते हैं या कुछ और हम कर रहे हैं । ये भी विचार आना चाहिये कि हमारी माँ इस उम्र में भी कितना सफर करती हैं, इधर-उधर जाती हैं । कम से कम हम अपने अड़ोस-पड़ोस मे इधर -उधर जाकर के लोगो को ये बात बतायें । अगर आज आप उन्हे नहीं बताते तो कल वो आपको दोषी ठहरायेंगे कि क्यो नही बताया हमें ? यदि आपने हमें बताया होता तो हम भी इस अमृत को पा सकते थे । तो एक तरह की जिम्मेदारियाँ आप पर आ गयी हैं । क्योकि आप लोग उसे पहले ही पा गये हैं । इसलिये बहुत जरूरी है कि इसे आप दूसरो को भी दें । अपने पास ही न रखे । आप लोगो के लिये भी वैसे देखा जाये तो मैने कोई खास काम नही किया । किन्तु आपके अन्दर ये शक्तियाँ जरूर जागृत हो गयी है । वो शक्तियाँ इस तरह से कार्यान्वित है कि आप आश्चर्यचकित है कि ये कैसे चमत्कार हो गया-वो कैसे चमत्कार हो गया । क्योकि आप परमात्मा के साम्राज्य मे आ गये है सब काम अपने आप हो रहे है । फिर भी हमें सोचना

चाहिये कि हम परमात्मा के साम्राज्य मे क्या करने आये है ? जैसे आप देखते है राजनीति में एक निर्वाचन क्षेत्र से एक आदमी निर्वाचित होकर आता है और जाकर के लोक सभा मे बैठ जाता है । उसे लोक सभा के अधिकार और सुविधायें भी मिल जाती है । पर उस पर एक बन्धन और भी पड़ जाता है कि जिस निर्वाचन क्षेत्र से वो आया है उसके लोगो को जाकर के देखना, सम्भालना, उनको बढ़ावा देना और उनकी प्रगति करना । अब आप भी समझ लीजिये कि आप एक निर्वाचन क्षेत्र से आये हैं । ये शक्तियाँ आपको सारी प्राप्त हो गयीं । अब इन शक्तियो को बढ़ावा देना उनकी प्रगति करना बहुत जरूरी है । अगर आपने ये नही किया तो शक्तियाँ लुप्त हो जायेगी और जिन लोगो को ये शक्तियाँ आपने देनी थीं वो भी रह जायेंगे, उन्हे कुछ नही मिलेगा इस लिये हमको ये सोचना चाहिये कि अब हमें क्या करना है । सहजयोग मे ध्यान धारणा से अपनी गहराई बढ़ा लो । लेकिन जब तक आप बाँटेगे नही तब तक ये गहराई एक सीमा तक पहुँचकर रुक जायेगी बहुत से लोग बहुत सुन्दर गाना गाते है । आप गाते तो अच्छे से है लेकिन ये गाना आप बाहर क्यो नही ले जाते आप दूसरो को जाकर क्यो नही सुनाते ? और जगह जाईये ये गाना सुनाईये । लोग इसे सुनकर बहुत ही आनन्द उठायेगे । ऐसे ही अनेक चीजे है जो लोगो के पास है लेकिन वो बस घर ही में बैठकर सब करते है । बहुत से लोग बहुत अच्छा भाषण देते है प्रवचन करते है । मैने उनसे कहा कि आप बम्बई और दिल्ली शहर में ही क्यो रहते है आप जाईये बाहर और प्रयत्न कीजिये । बाहर लोगो को सुनाईये भाषण । वो ज्यादा अच्छा रहेगा बनिस्बत उसके कि जिन लोगो को हम पार कर चुके है उनको सुनाने से क्या फायदा ।

तो सरल बात ये है कि हमें बाहर फैलना चाहिये । बाहर फैलने मे जो सामूहिकता है उसको समझना चाहिये । उसमें अनेक प्रश्न भी खड़े हो सकते हैं अनेक झगड़े भी खड़े हो सकते है अनेक तरह के लोग आपको हर तरह से चेलेंज भी कर सकते है । ऐसे लोगो से भिड़ने की जरूरत नही । उनसे सीधा कहना चाहिये कि यदि आपको कुंडलनी का जागरण चाहिये तो आप आईये । और अगर झगड़ा ही करना है वो बेकार की बात है । यदि वो चिल्लायें तो उनसे कहिये कि आपका विशुद्ध चक्र खराब हो जायेगा और फिर कभी आत्मसाक्षात्कार न मिल सकेगा । इस तरह से बहुत ही सूझ बूझ के साथ, समझदारी के साथ उनसे बात चीत करनी चाहिये । अब मै सुन रही हूँ कि अलवर में सहजयोग चल रहा है । पता नही कैसे लोग वहाँ गये । एक साहब का तबादला वहाँ हुआ और वहाँ सहजयोग चल पडा। पटना मे भी मुझे बताया गया कि दो सौ सहजयोगी है । बड़े आश्चर्य की बात है । पटना तो मैं कभी गयी ही नही । कानपुर इतने सहजयोगी है । एक शर्माजी वहाँ गये और इतने लोगों को आत्मासाक्षात्कार दे दिया । पूर्ण रूप से यही कार्य कर रहे है । किसको साक्षात्कार देना है, किसको ठीक करना है, पूरा उनका यही काम चल रहा है । एक मिनट भी वो ऐसा सोचते नही है कि चलो कुछ देर बैठ जायें या मुझे तो करना नही है या ठीक है मै जितना चाहता हूँ उतना कर लेता हूँ । इस तरह की बात वो कभी सोचते ही नही है । इसी प्रकार हमें भी सोचना चाहिये कि रात दिन हमें सहजयोग ही के बारे मे सोचना है और जब तक उसी मे हमे मजा आता है तो हम आगे जायें और काम बन सकते है ।

आपने मेरा जन्म दिन इतने प्यार से मनाया । पता नही आप लोग क्यो मनाते हैं मेरा जन्म दिन ? मै यही समझ पाती हूँ कि आप लोग सोचते है कि मेरे संसार मे आने से कोई बहुत बडा बात हो गयी है । सो मै नही सोचती । मै तो यह सोचती हूँ कि जिस दिन आप लोग पार हो जायेंगे बहुत बड़ा दिन होगा । जिस दिन मैने पहले इन्सान को पार किया था उस दिन मैने सोचा था कि बहुत बड़ा दिन है ।

जब मै पैदा हुई थी तो चारों तरफ अन्धकार था देखती थी कि किस तरह से ये बातें लोगों से कहूँगी । लोगों की तो बुद्धि कुंठित है । और सत साधु तो कोई है नहीं । अधिकतर लोग बिल्कुल अन्धकार में, अज्ञान में फसे है । इनको मै किस तरह से बात समझाऊँगी ? इनसे मै क्या कह सकूंगा ।तब मैने सोचा कि जब तक मै सामूहिक चेतना को जागृत नहीं करूंगी मेरी बात कोई नहीं सुनेगा । शुरू से मैने जान लिया कि कोई और बात कहने से पहले मुझे सामूहिक चेतना जागृत करने की व्यवस्था करनी है । इस पर मैने विचार किया, प्रयोग किये, जितने लोगों को जानती थी उनके चक्रों को मैने देखा और सोचा कि उनके चक्र कैसे ठीक हो सकते है । किस तरह से ये सब के सब लोग एक सामूहिकता मे आ जाये और पार हो जाये लेकिन अगर कोई कहे कि मैने इसके लिये बहुत तपस्या की-आदि-तो मुझे कभी भी ऐसा नहीं लगा कि मैने बहुत सारा कार्य किया । सवेरे चार बजे उठने की वैसे आदत थी । उठकर मै विचार करती थी अन्दर मै । विचार को अन्दर डालकर कि किस प्रकार कुंडलिनी का जागरण हो सकता है । अब ये सारे तरीके जो है अभी शायद आपके पास आये नहीं हैं पर धीरे-धीरे आपके अन्दर ये विचार अन्दर डालने का,चित्त मे डालने की जो एक व्यवस्था है उसे आप सीख जायेंगे । फिर जो भी विचार आयेगा उसे आप चित्त मे डाल सकते है । जैसे कम्प्यूटर मे प्रोग्रामिंग करते है उसी प्रकार जो हम सहजयोगी हैं एक कम्प्यूटर है और उसी प्रकार हम चित्त मे प्रोग्रामिंग कर सकते है विचार की प्रोग्रामिंग करके यदि हम चित्त मे डाल दे तो वो सब कार्यान्वित हो सकता है । परन्तु उसके लिये कम्प्यूटर भी प्रगल्भ होना चाहिये और जो कर रहा है उसके अन्दर भी सफाई होनी चाहिये । समझ लीजिये कि कम्प्यूटर में कोई खराबी हो गयी तो कोई लाभ नहीं । इसलिये आपको अपने को बहुत स्वच्छ निर्मल बनाना चाहिये ।

सबसे तो बड़ी बात जो बहुत सुखदायी बात है, वो ये कि विश्व-निर्मला-धर्म की स्थापना हुई आज कम से कम मेरे ख्याल से, पाँच-छह सात हो गये तब से विश्व-निर्मला-धर्म बढ़ता जा रहा है और लोग इसमे पूरी तरह से आ गये । अब जो सहजयोगी पहले किसी भी तरह से नहीं मानते थे उसी धर्म पर चलते थे, और वही रट लगाये रहते थे, गलत गुरूओं के पास जाते थे, मन्दिरों मे मास्जदों मे घूमते थे, अब आकर के जम गये है । वे कोशिश कर रहे है कि हम किसी तरह से अपने अन्दर इस धर्म को पाले । विश्व-निर्मला-धर्म को ।

ये नया धर्म ऐसा है कि इसमे सारे नये धर्म समाये है । हर धर्म के बारे मे इसमें जानकारी होती है और उसके तत्व को समझाया जाता है । इसके कारण मनुष्य यह जान जाता है कि ये सारे तत्व एक ही धर्म के हैं और जो शुद्ध धर्म है उसमे ये सारे ही धर्म पूरी तरह से निहित है । उसी में बैठे हुए है उसी मे जमें हुए है । इस प्रकार जब हम देखते है तब जो दूसरे लोग है, जो किसी भी धर्म का अनुसरण करते है,उसके पीछे पागल जैसे भागते है उनके बारे मे हम सोचते है कि वो पार नहीं है ।उनका धर्म और है । हम उनके धर्म के नहीं है । इस धर्म मे आने से हमारे अन्दर अहँकार जो था वो चला गया । हमारे अन्दर जो दुष्ट भावनाऐं थी वो चली गयी और सबसे बड़ी बात हमारे अन्दर जो अन्धविश्वास थे वो खत्म हो गये । क्यों कि ये सब प्रकाश है, धर्म शक्ति है । शक्ति के बगैर कोई कार्य नहीं हो सकता और शक्ति मे प्रेम छिपा है । जब ये प्रेम कार्यान्वित होता है तो शक्ति इस तरह से दौड़ती है जिससे कोई भी ऐसी बात नहीं हो सकती जो परमात्मा की दृष्टि से गैर कानूनी हो क्योंकि उस शक्ति में ज्ञान है, इसमे प्रेम छिपा है और पूर्ण सूझ-बूझ के साथ ये शक्ति कार्यान्वित है । सहजयोग मे आकर जो लोग शक्ति सम्पन्न हो गये उनके अन्दर अहंकार आने के बजाय अत्यन्त नम्रता आती है, अत्यन्त सौम्यता आती है और बहुत माधुर्य आ जाता है । ये सब चीजे जब होती है तो

मनुष्य कभी-कभी सोचता है कि मै ऐसा हो गया ? मुझे ये सब कैसे प्राप्त हो गया ? ये सब तो तुम्हारे अन्दर ही था पर तब तुम अपने को जानते नही थे और अब तुमने जान लिया है ।

जन्म दिवस के दिन पर यही ध्यान आता है कि एक माँ अपने बच्चे को जन्म देकर किस प्रकार से रखे कि मेरे बच्चे को कोई तकलीफ नही होनी चाहिये मुझे चाहे कोई तकलीफ हो जाये मेरे बच्चों को कोई तकलीफ नही होनी चाहिये । कुछ भी हो कैसा भी हो, मेरा बच्चा है उसको किसी भी तरह कोई तकलीफ ना हो । चाहे वो मुझे वो सताता भी हो, परेशान भी करता हो तो मेरे बच्चे को कोई तकलीफ नही होनी चाहिये । इस प्रकार जब आप सोचते है कि मुझसे ये गलती हो गयी, वो गलती हो गयी और इस प्रकार जब आप अपने अन्दर ममत्व की भावना लाते है तो मुझे आपको ये कहना है कि इस तरह की कोई बड़ी गलती आप कर ही नही सकते जिसे मै माँफ नही कर सकती । किन्तु आपको यदि अपना ही गौरव बढाना है और अपना जीवन विशेष बनाना है तो आवश्यक है कि हम अपने को किसी गरिमा से, किसी बड़प्पन से देखे जैसा हम जानना चाहते है । सिर्फ हम माता जी को मानते है, उनके हमने फोटो लगा लिये, उनका हमने बेज लगा लिया और हम माता जी को मानते है। मैने अभी किसी भाषण मे कहा था कि किसी को मानने से भी, यदि आप किसी को मानते है तो अच्छी बात है । इसकी ये तो पहचान है कि आपने कम से कम किसी अच्छे आदमी को मान लिया । लेकिन उस अच्छे आदमी का जो कुछ भी व्यक्तित्व, जो कुछ भी है वो आपके अन्दर कितना है? आपने उससे कितना प्राप्त किया या आपने उसके लिये कितना त्याग किया । ये विचार करना है । किसी को मानने या मानने से क्या फायदा ? समझ लीजिये कि एक गर्वनर है, आप कहिये कि मै गर्वनर साहब को मानता हूँ तो क्या वे आपको अन्दर आने देगे ? वो कहेगे ठीक है आप गवर्नर साहब को मानते है आप यहा बैठिये । इसी प्रकार आध्यात्म मे भी किसी को मानने से कार्य नही होने वाला । मान्यता से, आप जानते है कि वाइब्रेशन (लहरियाँ) बढ़ते है । लेकिन आप की जो प्रगल्भता है वो तो आप ही के ऊपर निर्भर है, आप ही की मेहनत है । आपने अगर हमे मान लिया तो आपने ये तो स्वीकार कर लिया ये व्यक्ति कुछ विशेष है, कुछ आदर्श है । पर उस आदर्श को भी अपने जीवन मे हमने उतारा है ? कहाँ तक हमने उतारा है ? कहाँ तक हम पहुँचे है ? जैसे सहजयोग मे बहुत सी शिकायते होती है ।और हमे लगता है कि कुछ तो बहुत पुराने सहजयोगी है जो जिस तरह से चल रहे है वो जरा कुछ अजीब सी बात है । सहजयोग जो है वो आपके हित के लिये है, आपकी शक्ति के लिये है, आपके गौरव के लिये है, मुझे इसमे क्या है ? मेरे पास तो है ही । मुझे सहजयोग करने की क्या जरूरत है सहजयोग आपको करना है । अब माँ है वो बच्चे को कहती है कि दूध पी ले । बच्चा कहता है कि नही। माँ उससे कहती है कि दूध पीने से तुम्हारी तन्दुरुस्ती ठीक हो जायेगी । वो हर समय इसी चिन्ता मे लगी रहती है कि इस बच्चे का हित किस चीज मे है ? अगर बच्चा अपने हित को समझ लेगा तो माँ का भी कर्तव्य पूरा हो जायगा ।

हालाँकि मेरे अन्दर कोई इच्छा नही है फिर भी मेरा कर्तव्य है कि मै आपको बताऊ कि आपको क्या प्राप्त करना चाहिये और आप कौनसी दशा मे है । अब बहुत से झगड़े और ओछी बाते खत्म हो गयी । इसमे कोई शक नही । आप लोग बहुत आनन्द मे आ गये ,प्यार के बन्धन मे आ गये । फिर भी एक बात जो मुझे लगती है वो ये है कि सहजयोग करने के लिये हमारे पास फुरसत ही नही है । आपने जो पाया है उसे देने की उत्कट इच्छा होनी चाहिये । किस तरह से इसे दूं? किस तरह से मुझे देना है ? इस तरह की भावना जब तक आपमे जागृत नही होती, इसलिये नहीं कि मैं अपने आपको दिखाना चाहती हूँ कि मै कोई बडा भारी वक्ता हूँ, इसलिये नहीं कि मै बड़ा भारी संगीतज्ञ हूँ, लेखक हूँ

या बड़ा भारी काम हूँ पर इसलिये कि मैं इसे देना चाहता हूँ । इसलिये नहीं कि मैं पैसा या नाम कमाना चाहता हूँ पर इसलिये कि मै इसे देना चाहता हूँ । ऐसे अन्दर से शुद्ध इच्छा होना चाहिये । तब आप देखिऐगा कि कुंडलनी बढ़ती है । जब ये शुद्ध इच्छा का ये स्वरूप आ जायेगा मेरी शुद्ध इच्छा है कि मुझे आत्मसाक्षात्कार देना है । कौन इसे ले सकता है कौन नहीं ले सकता है ? लोगो को पार कराने की जबरदस्त भावना अन्दर मे होनी चाहिये । ऐसा आदमी बिना दूसरों की आलोचना किये अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता जाता है । मेरे अन्दर तो ये जबरदस्त इच्छा है । ये इच्छा ही मेरी सब कुछ है । सहजयोग मे इसी प्रकार एक जबरदस्त इच्छा होनी चाहिये कि हम सहजयोग को कायदे से फैलायें । अब आप लोगो को मैने छोड़ दिया है । इसका प्रचार करें। हर जगह जाये लोगो को बताये कि सहजयोग क्या है ? सहजयोग से क्या-क्या लाभ होता है । खासकर देहातो मे आप कार्य करे । जो लोग बम्बई या दिल्ली शहर मे बैठे हुए है उनसे विनती है कि सब गाँव-गाँव जाये लोगो को समझाये । कम से कम भारत वर्ष के हर गाँव मे क्या आप नही सोचते कि मेरा सदेश पहुँचना चाहिये । सब लोगो को इसका पता होना चाहिये या क्या आप ही इसका मजा उठाते रहे ?

अतः आप सबको मेरा कहना है कि रोज दिन चर्या मे आप लिखे कि "आज मैने सहजयोग के लिये क्या किया ?" कितने लोगो को हमने पार किया ? कितने लोगो से सहजयोग की बात की ? इतना ही सब लोग मिलकर इसको बना सकते है कि कितने लोग वहाँ जायेंगे-इतने लोग वहाँ जायेंगे । इसी प्रकार से आपकी कुंडलनी का नया रूप आ जायेगा । आपके अन्दर से चैतन्य बहना शुरू हो जायेगा । आपके अन्दर से चैतन्य की लहरियाँ ऐसे बहेगी जैसे सूर्य की किरणें । लेकिन उसके लिये सबसे पहली चीज जो मैने बतायी वो ये कि आपके अन्दर देने की इच्छा होना चाहिये । आज भी बहुत से लोग है जो आकर ये बताते है कि उसकी ये तकलीफ ठीक कर दी,उसकी वो तकलीफ ठीक कर दी ।तो आपने ये नही देखना कि किससे क्या मिल सकता है । आपने देखना है कि किसी को क्या दे सकते है । किसकी क्या तकलीफ ठीक कर सकते है । किसी का यदि मेरू रज्जू खराब हो गया है तो उसके बहुत से चक्र खराब हो गये होंगे । इसी प्रकार बहुत लोगो ने अनेक प्रकार की दुविधाए है जिन्हे आप आसानी से मेहनत करके निकाल सकते है । हर एक आदमी को मै नही देख सकती,हर एक आदमी को मै नही ठीक कर सकती लेकिन आपने यदि शुरूवात करदी तो आप जान लीजिये कि आप सर्वशक्तिशाली हो जायेंगे और आप सबको ठीक कर सकेंगे । ये जरूरी नही कि मै ही सबको ठीक करूँ,कोई जरूरी नही । आप थोड़ी सी मेहनत से सबको ठीक कर सकते है और आपकी मेहनत से ही आपके अन्दर की शक्ति एक नये स्वरूप मे आ जायेगी और आप बैठे-बैठे यहाँ से ही लोगो के बारे मे बता सकते है ।

यही एक आजकै दिन मेरी इच्छा,मेरा एक ही इच्छा है कि इस चैतन्य से सारे भारतवर्ष में,नहीं सारे संसार में अमन चैन होना चाहिये । सारे संसार में शांति होनी चाहिये, सारा संसार ठीक होना चाहिये। ये मेरा अपना पूर्ण विश्वास है कि जब आप लोग इसमे उस इच्छा को लेकर, उस उत्कट इच्छा के साथ गर आप इसमे पड़ जाये तो किसी की मजाल नही (कोई कुछ नही कर सकता) कि आप अपना लक्ष न पाये । वो (सहजयोग) बढ़ता ही जायेगा, बढ़ता ही जायेगा क्योंकि आपके साथ परमात्मा साक्षात चल रहे है, सारे देवदूत चल रहे हैं । इसलिये आप प्रयत्न करके देखियें ।

इसी प्रकार आपको सोचना चाहिये कि मै सहजयोग के लिये क्या कर रहा हूँ ? चलो कहीं जाकर सहजयोग के लिये कुछ करे । और जो कुछ भी करे एक जान होकर करे । इसी प्रकार हर एक को सहजयोग के लिये यथाशक्ति कार्य करना चाहिये । हर एक को दूसरे के कार्य की खबर होनी चाहिये कि

वो क्या कर रहा है । ये सब आप ही कर सकते है ।

सहजयोग की जो भी प्रगति हुई है वो सब आपकी ही वजह से हुई है क्यों कि मै तो अब क्या करूँगी प्रगति, मेरी तो प्रगति हो चुकी । ये सब आपके लिये है और इस प्रगति के माध्यम से ही आप और भी प्रगति कर सकते है । इसके लिये मै यही कहूँगी कि अगले जन्म दिन से पहले आप भारत वर्ष मे सहजयोग को फैलाये तो आपसे दुगने लोग सहजयोगी हो सकते है और आशा है कि अगले जन्म दिन के वक्त मै सुनूंगी कि आपसे कितनेकदर आपने सहजयोगी बढ़ाये ।

सहजयोग के जो नियम है उन्हे जरूर पालना चाहिये । जैसे कल एक साहब आये थे उनकी दो पत्नियाँ है । कहने लगे ये सहजयोग मे आने से पहले है । मैने कहा सहजयोग मे अगर आपको आना है तो आप एक ही पत्नी के साथ रह सकते है, दो के साथ नही इस प्रकार हर आदमी को सोचना चाहिये कि मै इस नयी दुनियाँ में आया हूँ । मेरा चरित्र कितना उज्जवल है । यह बात चरित्र की है । मै कितना बदल गया हूँ । ये सब ध्यान में आना चाहिये ।

लेकिन ये सब किस लिये बनाया जाता है । इसका कुछ न कुछ तो कारण होना चाहिये । क्यों आप अपने जीवन को बदले ? बदलना इसलिये आवश्यक है कि आपकी कुंडालनी उभर आ सके । आज मेरा आपको अनन्त आशीर्वाद है । मेरे बच्चे जो बहुत प्यारे हैं वो युग-युग जिये और संसार की भलाई करें । यह मेरा अनन्त आशीर्वाद आप लोगो के साथ है ।

जनसाधारण कार्यक्रम
श्री माताजी निर्मला देवी का भाषण
मुम्बई-मार्च 1991

श्री रामकृष्ण जी और श्री चन्द्रशेखर जी तथा यहाँ उपस्थित सब सत्य के साधकों को हमारा नमस्कार । इतने सुन्दर भाषण आप लोगो ने दिये और इतनी प्यारी-प्यारी बाते आप लोगो ने कही । एक बहन के लिये ये आनन्द की बात है ही किन्तु न जाने क्यो हृदय भर आता है कि आज मेरे भाई मेरे साथ खडे है । हमने सुना कि धर्म की क्या ग्लानि आपने देखी है और धर्म के नाम पर कितने गलत काम होते है जो धर्म समाज के काम नही आ सकता ऐसा धर्म किसी काम का नहीं । किन्तु वास्तविक बात ये है कि धर्म जिन्होने बनाया है जो बड़े-बड़े अवतरण संसार मे हुए है और जो पैगम्बर आये, दार्शनिक आये, इन लोगो ने जो धर्म बनाये वो शुद्ध धर्म थे, समयाचार के हिसाब से वो धर्म बनाये गये । लेकिन बाद मे एक नयी पीढ़ी तैयार हुई उसे कहते है धर्म-मार्तंड । ये धर्ममार्तण्ड जो भी कुछ इन महानुभावों ने कार्य किया उसके बराबर विरोध मे खड़े हो गये । और जो बड़े-बड़े सन्त महानुभूतियाँ इस संसार में आयीं और उन्होने ने भी जो महान कार्य किये उन कार्यो को जब हम देखते है तो आश्चर्य होता है कि वह सब पैसा कमाने का एक धन्धा है । मै स्वय ईसाई धर्म मे पैदा हुई थी । अच्छा ही हुआ क्योंकि ईसाईयो की सारी पोल पट्टी तो मेरी समझ मे आ गयी । मेरे पिता स्वयं संस्कृत के बडे भारी विद्वान थे । माँ भी बहुत संस्कृत जानती थी । उस वक्त जब मैने बाईबल में पढा कि एक पौल साहब आये हुए है और वो धर्म के बारे मे बोल रहे है तो मैने अपने पिताजी से पूछा कि ये पौल कौन है ? मेरे पिताजी आत्मसाक्षातकारी थे । उन्होने कहा बेटा तुम समझो नही । ये है "घुसपैठया" । उसने जब देखा कि एक बहुत बडा मंच बन गया है, बड़े सारे लोग इसमे आ गये है तो मंच पर चढ़ गया और अगुआ बन बैठा । बाद मे उसी का जन्म अगस्टान की तरह से मनाया जाने

नगा । कवि जिब्रान बहुत बड़े सन्त हो गये है उन्होंने उनके खिलाफ बहुत कुछ लिखा है । सन्त ज्ञानेश्वर को भी इन धर्म मार्तण्डयो ने बहुत सताया । उसके बाद हमारे देश मे तुकाराम जैसे महान आत्मा को कितना छला गया । हर देश मे महान आत्मा हुए उन्हे जलाया नही गया तो उनको बदनाम किया गया, सताया गया और उनके मरने के बाद उन्ही के नाम पर मन्दिर बनाये गये,बड़ी-बड़ी संस्थाऐ बनायी गयी और बहुत से कार्य हुए । अभी मैने एक किताब पढ़ी थी जिससे मै हैरान हूं कि वैटिकन ने जो कि पोप की अपनी पूरी राज्य व्यवस्था है ने दो बिलयन {दो अरब} झूठी सिक्योरिटी छापी

समझ लीजिये कि परमात्मा कार्य करनी वाली संस्थाऐ इस तरह से भगवान को भी बेचती है और धर्म को भी बेचती है । पैसा तो कमाती ही है, माफिया बनी हुई है । और ये सीधे साधे भोले लोग मन्दिरो मे चर्च मे जाते है और सोचते है कि यही परमात्मा है जिसने हमे बनाया, और उसी की भक्ति व श्रद्धा मे हम रहे । ऐसी एक से एक बढ़कर चीज आप देख सकते है । आपने नाथद्वारा का नाम सुना होगा । हर एक धर्म मे एक से एक बढ़कर के धर्म मार्तण्डय बैठे हुए है जो कि माफिया है ।अब तो मुझे लगता है कि हिन्दुस्तान मे कितने ही माफिया शुरू हो गये हैं ।

सबसे पहली चीज है ये पैसा । धर्म मे पैसा कमाना । जब पैसा कमाना शुरू हो जाता है तो आप समझ लीजिये कि ये धर्म हो ही नही सकता क्यो कि परमात्मा पैसा नही समझते । मै तो पैसे के मामले मे बहुत बेवकूफ हूं । आप तो व्यापार वाले है लेकिन मेरा बिजनेस पैसे के बगैर चलता है । न जाने कहाँ से मदद आ जाती है,न जाने कहाँ से सब हो जाता है । एक अर्थ-शास्त्र ऐसा विषय है जो बिल्कुल मेरी खोपड़ी मे नही घुसता क्योंकि इन्सान ने बनाया है और दूसरे आपका कानून है इन्सान का बनाया हुआ कानून मेरी खोपड़ी मे नही घुसता, परमात्मा का कानून मै समझ सकती हूं । लेकिन ये कानून जो हम इस्तेमाल कर रहे है ये भी परमात्मा से आया है । हमारे अन्दर ये विवेक का गुण भी परमात्मा ने दिया हुआ है । हम जो लोग जो कायदा बनाते है उसे हम स्वीकार करे । क्यो कि मनुष्य ने जो कायदे बनाये है उनमे अनेक दोष है लेकिन परमात्मा के कायदे मे कोई दोष नही । जैसे कि आपने अभी कहा कि आज अपने देश मे गरीबी है, कितने लोग परेशान है हर तरह से तंग है । इसका इलाज क्या हो सकता है ? आप लोग बताइये । क्यो हम लोग तंग है ? क्यों परेशान है ? क्यो हम गरीब है ? आपको पता होना चाहिये कि हमारे बहुत से शिष्य स्विस बैंक मे भी है और विश्व बैंक मे भी है । वो बताते है कि विश्व बैंक से वो हमारे देश मे बहुत सा कर्जा देते है । तो हम तो कर्जे मे आ गये और वो पैसा वापस स्विस बैंक चला जाता है । स्विस बैंक फिर वो पैसा विश्व बैंक को देता है और विश्व बैंक फिर से कर्जा देता है । इस तरह से पैसा घूमता रहता है और हम है कि हमारे पर कर्जा चढ़ता ही जा रहा है । और पैसा बैठा है स्विस बैंक मे। ये जो चक्र चला हुआ है इसका इलाज क्या है ?

आज जो अराजकता फैली हुई है,जिस तरह से भ्रष्टाचार फैला हुआ है, जिस तरह से नैतिक मूल्य गिर गये है इन सबका इलाज एक ही है क्यो कि इसकी जड़ है मनुष्य । मनुष्य गिर गया इस वजह से ये सब चीजे गिर गयीं । परमात्मा ने इसमे कोई बिगाड़ नही किया । फूल उसी तरह से आते है आकाश में चन्द्रमा उसी तरह से विराजमान है । ये जो ऋतम्भरा प्रज्ञा है ये अपना कार्य अच्छी तरह से कर रही है । लेकिन इसमे कही कोई दोष है वो इन्सान मे है । जैसे आपने फरमाया कि बम्बई मे लोग अड़ोसी पड़ोसी को नही जानते । सही बात है । पर इसके मर्म मे, इसके तत्व मे यदि आप पहुंचे तो आपको एक बात समझ मे आ जायेगी कि मनुष्य ही इसका कारण है । जानवर तो पशु है, परमात्मा के पाश में है । शेर-शेर ही रहता है, गीदड़ नही हो सकता,पर मनुष्य शेर, गीदड़,साँप ,बिच्छू कुछ भी हो सकता है । कारण परमात्मा ने उसे ये स्वतन्त्रता दी है कि चाहे स्वर्ग मे जाओ चाहे नर्क मे जाओ । तब एक बात आती है कि ये मनुष्य कुछ अधूरा सा है । माना कि अमीबा से इन्सान हो गया । इसे

बहुत सी बाते आ गयी जैसे किसी जानवर को आप चाहे तो वो गदे नाले से चला जायेगा पर मनुष्य नही जा सकता क्योंकि उसको दुर्गन्ध आयेगी । उसको सौन्दर्य समझ मे आता है । उसको बहुत सी बाते समझ मे आती है तो भी अधूरा है । अभी केवल सत्य पर नही पहुँचा । जब केवल सत्य मे पहुँच जायेगा तो उस प्रकाश मे वो बदल तो जायेगा ही । जैसे अधेरे मे खड़े हुए हाथ मे हमने कुछ पकड़ लिया । कोई कह रहा है कि साँप है तो भी हम कभी न छोड़े । थोड़े से प्रकाश के आते ही हम उसे छोड देगे । किसी को कुछ कहने की जरूरत नही । इसी प्रकार मैने ये सोचा था कि संसार मे मनुष्य का पांरवर्तन होना जरूरी है । मै जानती थी कि मेरा ये काम है, मेरे पिता भी जानते थे । इस पांरवर्तन को लाना अति आवश्यक था उसके लिये हमारे अन्दर यह व्यवस्था है ये मै नही जानती थी । हमारे अनेक शास्त्रो मे भी लिखा हुआ है कुरान मे भी इसे असस कहा गया है । मोहम्मद साहब ने भी कहा है कि जब तुम्हारा पुनः उत्थान होगा तो तुम्हारे हाथ बोलेगे,बाईबल मे भी जीवन वृक्ष(ट्री आफ लाइफ) का बहुत सुन्दर वर्णन किया हुआ है जैसे गीता में है । जैसे एक बात जो उन्होने घुमा फिराकर कही वो ये कि यह कार्य कुंडलनी की जाग्रति से होना है हालाँकि सस्कृत मे अनेक ग्रन्थो तथा उपनिषदो पर इसकी छाया है । कही-कही तो बहुत विषद रूप से भी बताया गया है । ये सब होते हुए भी और अग्रेजी राज्य आने की वजह से हमने संस्कृत पढना छोड दिया अंग्रेजी को हमने बहुत महत्व पूर्ण समझ लिया इस मामले मे मेरे पिता का एक कटाक्ष था कि आप अग्रेजी स्कूल नही पढ़ेगे आपको हिन्दुस्तानी स्कूल मे पढना है, मराठी भाषा पहले सीखो, फिर हिन्दी सीखो । तुम्हे अगर हिन्दी भाषा नही आती तो तो तुम हिन्दुस्तानी नही हो । अग्रेजी तो किसी को भी आ सकती है । मै देखती हूँ कि मैने अंग्रेजी कभी पढी-लिखी नही हूँ फिर भी अग्रेजी काफी साफ बोल लेती हूँ । और सस्कृत से भी मुझे बहुत दिलचस्पी थी ।

बहरहाल हमारे पास जो गहन सम्पदा थी उसे कभी देखा ही नही,जाना ही नही लोगो को कुंडलनी का नाम भी न मालुम था । वो तो कुडलनी को कुडली समझते थे । उत्तरी भारत मे तो इससे भी बदतर हालत है । मै यह सोचती थी कि इनसे बात अभी करे कैसे । इसपर मै अपने पिता से चर्चा करती थी । उन्होने मुझसे कहा कि बेटे अभी आप इसके बारे मे कोई बात मत करो । तुम्हे सामुहिक चेतना जाग्रत करनी है । सामुहिक रूप से कुंडलनी का जागरण करना है, पहले इसका तरीका निकालो । दूसरी बात अपना देश भी स्वतन्त्र नही था । पर मनुष्य को समझना मुश्किल बात थी उसपर जरूर मैने अपनी चित्ती के साथ-एक विशेष चीज होती है चित्ती-चित्त को जो चलाती है वो है चित्ती । उस सूक्ष्म चीज से मैने मनुष्य के बारे मे जानने की कोशिश की । अनेक लोगो से मै मिली । पहले तो मेरे पिता जी ही बहुत सोशल आदमी थे फिर आपके पिता जी जमना लाल जी मेरे चाचा जैसे थे उनसे भी बहुत बाते होती थी । गांधी जी से भी बहुत बाते होती थी । किन्तु जो बात मै जानना चाहती थी कि मनुष्य में ऐसा कौनसा दोष है कि वो आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त नही हो सकता । इस चीज को ढूँड-ढूँड कर अन्दर इसपर ध्यान करती । जब मुझे यह पता हो गया कि कुंडलनी का जागरण अब हो सकता है,सामुहिकता से, सहस्त्रार का खोलना जब बन पडा तब मैने सहजयोग शुरू किया-एक स्त्री ने । अगर आप कोई नकली चीज बनाना चाहे तो आपको कोई अधिक मेहनत नही करनी पड़ती पर किसी असली चीज को बनाने पर तो समय लगता है । इसलिये एक स्त्री से शुरूवात हुई, आगे बढते-बढते आज सहजयोग बहुत बढ गया है । तो भी मुफ्ती साहब हमेशा कहते थे कि माँ बहुत से लोग एक दम बुद्धू है । मै ये कहूँ कि अज्ञान में है,अन्धकार में है । वो समझ नही पाते कि वो है क्या । उनके अन्दर इतनी बडी शक्ति अपनी है, आपकी ही अपनी शक्ति है, आप ही का अपना स्वरूप है । जब सब मुझसे कहते

है मां आपने ये किया, मां आपने वो किया तो मै देखती रहती हूं कि मैंने क्या किया । एक जला हुआ दीप अगर दूसरे दीप को जलाता है तो उसने कौनसा काम कर दिया ? ये आपकी अपनी शाक्त है और ये याद जाग्रत हो जाती है तो इसलिये कि आपने बहुत पुण्य किये है और इसका समय आ गया है इस बात को बहुत कम लोग समझते है । कुछ यह समय मेरे जन्म से ही आ गया है और अक्षय पूजा के दिन भी यह जो ब्रह्म चैतन्य चारो तरफ फैला हुआ है उसे अनेक तरह से सम्बोधित किया जाता है । हठयोग मे इसे ऋतम्भरा प्रज्ञा कहते है और बाईबल मे इसे आल परवेडिंग पावर आफ गाड (परम चैतन्य) कहते है, पुरान मे इसे रूह कहते है । अनेक तरह से इसका वर्णन किया जाता है । ये अभी तक तटस्थ रूप से देख रही थी इस कलयुग को । लेकिन एक दम से कृतयुग की शुरूवात हो गयी और वे जो अपने चारो ओर फैली हुई शाक्त है ये कार्यान्वित हो गयी । ये बहुत बडी चीज है । ये समय है और इसका फायदा अगर हम उठा रहे है तो कोई विशेष बात नही क्योंकि समय ही बदल गया है । और समय इसलिये बदल गया है कि परमात्मा चाहते हैं कि आप अपने असली स्वरूप को जाने इसके परिणामस्वरूप बहुत सी बाते हो जाती हैं । आप तो जानते ही है कि तीन डाक्टरो को पद्मश्री मिली है सहजयोग में और साठ डाक्टर लन्दन मे इसपर प्रयोग कर रहे है और वो हैरान है । अभी डाक्टर साहब बता रहे थे कि रूस मे चार सौ डाक्टर सहजयोग कर रहे है । उन्होने कहा मां शोध मे क्या रखा है हमे सहजयोग का अभ्यास करना है ।

सहजयोग मे सर्वप्रथम तन्दुरस्ती आ जाती है तबियत आपकी अच्छी हो जाती है । ये तो अपने देश के लिये बहुत अच्छी बात है । अपने गरीब देश मे बिना पैसा खर्च किये यदि लोग ठीक हो जाये तो हमारी आधी विपत्ति समाप्त हो जाये । किसी जमाने मे सरकार ने मुझसे कहा था पर मैने कहा कि मै बन्धन मे नही बध सकती । वैसे मै इसके लिये कार्य कर सकती हूं । ये बात आध्यात्मिक ही है इस तरह से बात आयी गयी हो गयी

हम केवल शरीर ही तो नही है कि शरीर को ही ठीक करते रहे । लोग शरीर के पीछे बहुत दौडते है । हठयोगी वगैरा बहुत ही क्रोध हो जाते है कभी -कभी तो उन लोगो से मुझे इतना गर्मी आती है कि मै कहती हूं कि हठयोगी मेरे पास आने से पहले कुछ दिन पानी मे बैठे । हमे जान लेना चाहिये कि अपने शरीर की इतनी चिंता करने की कोई आवश्यकता नही । जब आप सहजयोग मे आ जाईएगा तो आपका शरीर अपने आप ठीक हो जाएगा और आपको कोई बीमारी नही होगी आज तक मै किसी दाँतो के डाक्टर के पास नही गयी । ये जो रोशनी मेरे आँखो पर डालते है इसके कारण चार सालो से ये चश्मा मुझे कभी-कभी लगाना पडता है । जब ये शाक्त आपके अन्दर दौड रही है तो आपको क्यो अपने शरीर की चिन्ता करने की जरूरत है । जिन चक्रो की खराबी से आपका शरीर खराब होता है वही ठीक हो जाते है । फिर यही चक्र ठीक हो जाने से आपकी मानसिक स्थिति ठीक हो जाती है टेन्शन वगैरा सब ठीक हो जाते है गरीब सीधे-सादे लोगो को टेन्शन नही होता बहुत व्यस्त लोग इसके शिकार है । वो भी सहजयोग मे आकर बिल्कुल शान्त चित्त हो जाते है जब तक आप इस स्वस्थ माहौल से झूझते रहेगे आपकी समस्याओ का कोई हल नही पर आप अगर इससे बाहर आ जाये,पानी से जैसे आप बाहर आ जाये तो आपको लहरो का डर नही रह जाता, आप केवल देखते है पर आप अगर नाव मे बैठ जाये तो आप दूसरो को भी अपने साथ खीच सकते है और तैराक हो जाये तो नाव की भी जरूरत नही ।

इसी प्रकार मनुष्य के अन्दर जब ये शाक्त अपना प्रादुर्भाव प्रदर्शित करती है उस वक्त वह आदमी एक अजीबो-गरीब एक विशेष तरह का मानव हो जाता है । जैसे मैने कल बताया था-अन्डे का

पक्षी होना उसी प्रकार मनुष्य का आत्मसाक्षात्कारी होना । एक तो उसमे भय आदि सब भाग जाते है, चिन्ता आदि सब भाग जाती है । वो असली माने मे स्वतन्त्र हो जाता है क्यो कि कोई सी भी आदत उसे चिपकती नही । अमीर देश जहाँ लोग नशीली दवाऐ लेते है वहाँ भी सहजयोग ने कमाल कर दिया है ड्रग्स लेने वाले एक रात मे ड्रग्स छोड़कर खड़े हो गये । शराब पीने वालो ने एक रात मे शराब छोड़ दी जब आत्मा का प्रकाश आता है तो मनुष्य सब गन्दगी अपने आप छोड़ देता है । इन आदतों को छोड़ देने से उसकी पैसे की भी बचत हो जाती है और उसकी बुद्धि इतनी प्रगल्भ हो जाती है कि वो अनेक कार्य बगैर परेशानी कर लेता है । लन्दन मे आपने सुना होगा कि बहुत बेकारी है लेकिन नाम मात्र के लिये भी कोई सहजयोगी वहाँ बेकार नही है । जो एक बार सहजयोग के समुद्र मे आया उसको नौकरी मिल गयी उसका आत्मसम्मान भी बढ़ गया । अभी आपने आशीष को गाते हुए सुना, उसने इतनी जल्दी अपने इम्तहान पास कर लिये । यहाँ कुछ लड़के इंजीनियर है वो अव्वल दर्जे मे पास हो गय बहुत सी छात्रवृत्तियाँ {वजीफे} सहजयोगियो को ही मिलते है । उनकी बुद्धि इतनी सूझ-बूझ वाली है कि इनको कायदा कानून भी नही बताना पड़ता । उनके अन्दर धर्म जागृत हो जाता है । वो गलत काम करते ही नही । कभी सन्त-साधुओ ने गलत काम किये है ? बहुत गुस्सैल लोग अति नम्र होकर प्यारी-प्यारी बाते करने लगते है

ये जो परिवर्तन मनुष्य मे आ जाता है उससे वो एक प्रचन्ड व्यक्ति भी हो जाता है {डायनैमिक} इसके और बहुत से पहलू है मनुष्य शान्त हो जाता है, आनन्द मय हो जाता है, सामूहिक चेतना जागृत होने से विश्व बन्धुत्व आ जाता है । अब हमारे यहाँ 56 देशो के लोग आते है । मैने कभी उनको लड़ते झगड़ते नही देखा सिर्फ आपस मे चुहल जरूर रहती है । एक -दूसरे को चिढ़ायेंगे, मजाक चलते रहते है । परन्तु अपशब्द कहते हुए मैने उन्हे कभी नही सुना । विदेशी लोग संस्कृत बोलते है और भारतीय विदेशी भाषा । तो एक तरह की जो प्रगल्भ व्यक्तित्व की जो हमारे अन्दर शक्ति है वही प्रस्फुटित हो जाती है और मनुष्य एक विशेष रूप मे सामने आता है । आपस की दोस्ती भाईचारा इस कदर है कि देखते ही बनता है । जब मै रूस गयी तो जर्मनी से 25 आदमी और औरते फौरन दौड़े कहने लगे कि माँ हमने ही उन्हे तबाह किया था । अपना रुपया-पैसा खर्च के रूस के लोगो को बड़े प्यार से उन्होने पार कराया । ऐसा प्यार कहीं देखने को नही मिलता । हर धर्म के लोग हमारे शिष्य है । सभी अपने अन्दर के दोषो को देखते है दूसरे के दोषो को नही देखते । इस प्रकार हमारे अन्दर जो दोष है, हमारे समाज मे दोष है उन्हे फौरन देखना चाहिये ।

एक अन्तर-दृष्टि आती है और एक बाह्य दृष्टि भी आती है । सहजयोग जब बाह्य मे फैलने लगता है तो इसके अनेक वैज्ञानिक फायदे भी होते है । हमारा देश कृषि प्रधान देश है । जब चैतन्य लहरियाँ आप पानी मे डाल देते है और वो पानी खेतो को देते है तो खेती इतनी बढ़िया होती है कि देखते ही बनता है । मैने अपने घर पर एक प्रयोग किया तो बहुत बड़ा सूरजमुखी का फूल आया । पर इन चीजो को कौन पूछता ? चावलो की भी आश्चर्यजनक फसल हुई ।

सबसे बड़ी चीज जो मनुष्य पाता है वो है समाधान । समाधान इस तरह का कि मुझे बहुत कुछ मिल गया । अब मुझे दूसरो को देना है, दूसरो की भलाई करनी है । वो अंग्रेज जो हिन्दुस्तानियो से बात नही करते थे आज वही उनकी झोपड़ियो मे जाते है, कुल्हड़ो मे चाय पीते है हिन्दी सीखते है एक अनूठा प्रेम है उनमे । काश कि आज गाँधी जी होते, मेरे पिता होते देखते कि इस देश मे कितना बड़ा कार्य हुआ है । पर सबसे बड़ी बात यह है कि सहजयोग मे हमारा वास्ता भारतियो से है । इस भारतीयता को यदि आपने समझा नही, अपनाया नही तो, मै यही कहूँगी कि जिम्मेदारी आपकी होगी । धर्म

के बारे में इतनी गहनता से किसी ने भी नहीं विचारा । इसी योग-भूमि में सारे कार्य हो रहे है और यदि यहाँ जन्मे है तो किसी बड़े पुण्य से हो । बहुत सी आफ्तें कलयुग में दिखाई दे रही है पर मैं आपसे बताना चाहती हूँ कि जिस पृथ्वी पर आप बैठे है यह बहुत पावन है । इस धरती पर सन्त साधु चले है । यहाँ रामचन्द्रजी भी जूता उतारकर चले । पुण्य मार्ग से जाने से हर चीज की सुरक्षा होगी ।जो कुछ भी अच्छा होना है वो इन्हीं लोगों की इच्छा से होगा । सारे संसार का हित होगा और भारतवर्ष का विशेष रूप से आध्यात्म हित होगा । इसमें मुझे कोई शक नहीं । इस देश में लोगों की इतनी आस्था है कि विदेशी सहजयोगी जब भारत आते है तो पहले इस पृथ्वी को चूमते है । लोगों ने कारण पूछा तो कहने लगे कि यह योग भूमि है । चारों तरफ चैतन्य फैला है । सभी आत्मसाक्षात्कारी इसे देख सकते है । कितने ही लोग यहाँ ऐसे आये और उन बेचारों को यहाँ ठगा गया पर जहाँ कमल होते है वहाँ कीड़े-कीटाणु भी होते है पर अब समय आ गया है, सब बदल जायगा दो साल में आप इसका असर देखेंगे । आप जानेंगे कि ये सहजयोगी सारे संसार में फैले है वो भारतवर्ष की बहुत शुभकामना करते है । हर सुबह प्रार्थना करते है कि भारत हमारा आदर्श मन्दिर बन जाये और जब भी हम जाये सहजयोग में अपने को बढ़ाये

आशा है हमारे सहजयोगी यहाँ जो है इस चीज को समझें और अपनी जिम्मेदारी को समझे । अपनी गहनता बढ़ाये, उसी के साथ उसका प्रसार करें और वृक्ष जैसे बढ़ता है उसी तरह गहनता में उतरें । इसके अनेक लाभ है आप बिजनेस में है तो मैं कहूँगी कि बिजनेस तो इसके बहुत लाभ है । लक्ष्मी जी की आप पर बहुत कृपा होगी-पैसे की नहीं । लक्ष्मी जी के अवतार को यदि आप देखे तो उनके हाथों में कमल है । कमल क्योंकि गुलाबी है यह द्योतक है प्यार का । जो लक्ष्मी पर भी बहुत ही व्यवस्थित भी होता है । कमल के अन्दर अगर हजारों काँटे वाला भौरा भी चला जाये तो उसे भी वह अपने अन्दर स्थान है । इस तरह उदार तबियत वाला लक्ष्मी पोत होता है । लक्ष्मी जी का एक हाथ अभयमुद्रा में तथा एक दान मुद्रा में । एक हाथ से आश्रय तथा दूसरे दान देवी का बताया हुआ है । फिर वह कमल पर खड़ी है अर्थात किसी पर जबरदस्ती किसी पर अपना दबाव नहीं डालती ये लक्ष्मी पोत के के लक्षण है और ऐसे लक्ष्मी पोत तैयार हो जाते है सहजयोग में आकर के । पैसे की कभी परवाह नहीं करेंगे । पैसे तो ऐसे आता है जैसे पाँव की धूल कोई उसे चिन्ता की बात नहीं मेरे पास तो कोई सेक्रेटरी भी नहीं और बैंक-बैंक तो मैं कुछ जानती नहीं पर सभी कुछ सुचारू ढंग से कैसे चल रहा है ? हम लोगों के जीवन में चमत्कारी रूप से सब होता है । परमात्मा सर्वशक्त मान है वो जो करना चाहे कर सकता है । पर इसके लिये पहले सहजयोग में आईये फिर देखिये परमात्मा के साम्राज्य का कमाल और उसका चमत्कार । इसमें मेरा कोई विशेष कार्य नहीं । परमात्मा जो चाहे कर सकते है वो चाहे तो सुई के छेद में से ऊँट निकाल सकत है पर ये विश्वास आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आ सकता है उससे पहले नहीं क्योंकि तभी आप देखते है कि उनकी परम महिमा करुणामय कृपा,इतना ही नहीं उनका कार्य कितना मनुष्य के लिये हितकारी है, कितना प्रेममय है ।

सहजयोग में आने के बाद एक तो परमात्मा की प्रतीति हो जाती है और एक अपनी भी प्रतीति हो जाती है । और पूर्णतया आपको केवल सत्य,केवल धर्म, और केवल जीवन मिल जाता है इसमें सामूहिकता में आप पूरी तरह जाग्रत होकर के और एक आनन्द के सागर में हर समय रहते है समाधान के सागर में और सारे संसार की भलाई आप कर सकते है । ऐसे सुन्दर सहजयोग को यदि आप ठुकरा दे तो मुझे यही कहना है कि आपने अभी अपनी औकात नहीं समझी,अपनी कीमत नहीं समझी और अपनी कीमत करने पर आप समझ जायेंगे कि आपने अगर अपने बारे में जानना है तो आपको सहजयोग

में उतरना पड़ेगा ।

आज आप लोगों ने मेरे जन्म दिवस पर इतनी शुभ कामनायें दी, और इतना प्यार भरी बातें कहीं इसी इतना तो कहना है कि जब जीवन शुरू होता है तो खत्म भी हो जाता है किन्तु आप लोगों के कारण सहजयोग शुरू तो हुआ पर खत्म नहीं होगा । ये बढ़ता ही जायेगा, बढ़ते जायेगा जब तक सारा संसार सुन्दर न हो जाये सहजयोग इसी तरह से बढ़ता ही रहेगा । यही आप सब के सामने मैं इच्छा करती हूँ ।

IMPORTANT NOTE

1. Please correct the address for **SAHAJA AUDIOS** as follows :

   Sahaja Audios
   A - 16, Mahendru Enclave,
   DELHI - 110 009.
   (Telephone : 7124730)

   (Audio by hand - Rs. 40/- and
   by Post - Rs. 45/-)

2. Demand Draft or Cheque (if sent) must indicate the correct name, or else the same will be returned. Please note the names once again

   A) Sahaja Audios

   B) Sahaja Vidios

   C) Chaitanya Lahari

राम नौमी पूजा - कलकत्ता 25.3.91

आप जानते हैं कि हमारे चक्रों में श्री राम बहुत महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए हैं । यदि आपके कर्त्तव्य या प्रेम में कुछ कमी रह जाए तो ये चक्र पकड़ते हैं । श्री राम पूरी तरह से मनुष्य रूप धारण किए हुए थे । वे ये भी भूल गए थे कि मैं श्री विष्णु का अवतार हूं । उन्हें भुला दिया गया था । किन्तु सर्व संसार के लिए वे पुरूषोत्तम राम थे । हम लोगों को सहजयोग में ये समझ लेना चाहिए कि किसी भी देवता को जब हम अपना आराध्य मानते हैं तो क्या हमारे अन्दर उसकी विशेषताएँ आई है ? कौन से गुण हमने प्राप्त किए । श्री राम चन्द्र जी के तो अनेक गुण हैं । उनका एक गुण यह था कि राज कारण में सबसे ऊँचा उन्होंने जन मत को रखा पत्नी और बच्चे उनके लिए गौण थे । हमारे आजकल के राजकीय लोग इस चीज़ को यदि समझ लें तो वो निस्वार्थ हो जाएंगे, धर्म परायण हो जाएँगे । श्री राम की जो सीमा है उसे आज तक किसी ने अपनाने का प्रयत्न नहीं किया । उनके भजन गाने, उनके नाम से संस्थाएं तथा राम मंदिर बना लेने से क्या श्री राम आपके अन्दर प्रवेश कर सकते हैं ? आपके जीवन में उनका प्रकाश आ सकता है या नहीं ? ये सिर्फ सहजयोगी ही कर सकते हैं कि अपने अन्दर जन्मे श्री राम को अपने चित्त के प्रकाश में लाएं । वो अत्यन्त निर्पेक्ष थे । ऐसे तो सभी देवता लोग किसी भी पाप पुण्य से रहित हैं । जैसे श्री कृष्ण ने इतने लोगों को मारा, श्री राम ने रावण का वध किया । ये हमारे दुनियावी दृष्टि से हो सकता है कि पाप हो किन्तु परमात्मा की दृष्टि से नहीं हो सकता । क्योंकि उन्होंने दुष्टों का नाश किया और बुराई को हटाया । और इनको अधिकार है कि इस कार्य को करने के लिए जो कुछ भी करना चाहे करें । जैसे देवी ने राक्षसों का संहार किया । तो कोई कहेगा कि देवी ने पाप किया ? उनका कार्य ही ये है कि वो राक्षसों का संहार करें और जो साधु हैं उनको सम्हालें ।

श्री राम चन्द्र के जीवन में एक अहिल्योद्धार बहुत बड़ी चीज़ है । पति से शापित अहिल्या का उन्होंने उद्धार किया । उस ज़माने में कोई स्त्री किसी तरह से वाम मार्ग में चली जाती थी तो उसका पति अगर साधू हो और उसकी स्थिति अगर ऊँची हो, उसे शापित कर देता था । किन्तु अहिल्या पर झूठा ही आरोप लगाया गया था और इस तरह से उसे पत्थर बना दिया था । श्री राम ने उस अहिल्या का भी उद्धार कर दिया । विशेषकर उनका एक पत्नी के प्रति प्रेम व्रत बहुत समझने लायक है । मनुष्य के रूप में उन्होंने अपने पत्नी के सिवाय किसी और स्त्री की तरफ आँख उठा कर नहीं देखा । जब हम राम की बात करते हैं तो हमारे अन्दर पतित्व भी स्वच्छ होना चाहिए । अगर कोई स्त्री राम के बारे में सोचती है तो उसको भी अपने पति के प्रति वैसी ही श्रद्धा होनी चाहिए जैसे सीता को अपने पति के प्रति थी । और उसी प्रकार पति को भी श्री राम जैसे एक पत्नी व्रत होना चाहिए । सहजयोग में ये बात कठिन नहीं । स्त्री का मान रखना चाहिए । जब रावण सीता जी को उठा ले गए थे तो श्री राम ने ये कर्त्तव्य समझा कि सीता जी को वहाँ से छुड़ाकर लाएँ । पर जनमत को रखने के लिए महालक्ष्मी सीता को जिन्हें इतने वर्ष मेहनत करके वे छुड़ाकर लाए थे, उन्होंने त्याग दिया । सीता जी स्वयं साक्षात् देवी थी उनको त्यागने का कोई विशेष परिणाम नहीं होने वाला था फिर भी राम ने उन्हें त्याग दिया ताकि लोग ऐसी बातें न करें जो जन हित के खिलाफ हों और उनका आदर्श किसी तरह से ऐसा न बन जाए कि जिससे लोग अपने यहाँ इस तरह की औरतों को पनपाएँ ? इस पर भी लोग शक करते हैं । हालाँकि सीता जी निष्कलंका थी और देवी स्वरूपा, स्वच्छ और निर्मल थी । त्यागे जाने पर सीता जी ने भी श्री राम का एक तरह से त्याग कर दिया । धर्म के लिए श्री राम चन्द्र जी और सीता जी का

एक दूसरे को त्यागना, सीता जी का पृथ्वी में समाना और फिर अन्त में श्री राम जी का सरयु नदी में अपना देह त्याग करना सभी अत्यन्त घटनात्मक और चमत्कार पूर्ण है । सारे जीवन में देखिये तो सीता और राम का आपस का व्यवहार और उनका एक दूसरे के प्रति श्रद्धामय रहना । हालाँकि उन्होंने सीता जी का त्याग किया था पर सीता जी जानती थी कि ये उनका परम कर्त्तव्य है अतः उन्होंने कभी उनकी बुराई नही की । और बड़ी सादगी से अपने बच्चों को चलाया, उनको पनपाया, उनको बढ़ावा दिया । श्री राम के बच्चे - लव और कुश भी भक्त स्वरूप संसार में आए । उनको हम शिष्य के तरह से देखते हैं ये हमारे अन्दर शिष्य की शक्ति के द्योतक हैं शिष्य स्वरूप इन लोगों ने बहुत छोटी उम्र में धनुष विद्या सीख ली थी और इस छोटेपन में ही उन्होंने रामायण आदि, और संगीत पर बहुत कुछ प्रावीण्य पाया था । इसका मतलब ये है कि शिष्य को पूरी तरह से अपने गुरू को समर्पित होना चाहिए । शिष्य का यह स्वरूप हमारे अन्दर भी है । माँ, जो कि शक्ति है, उसके प्रति वो पूरी तरह से समर्पित थे । उस वक्त श्री राम से भी लड़ने के लिए वे तैयार हो गए अपनी माँ के लिए। तो माँ को उन्होंने दुनियाँ में सबसे ऊँची चीज समझा और उस माँ ने भी अपने बच्चों का पालन, उनको आश्रय देना, उनको धर्म में खड़ा करना, और उनकी पूरी प्रगति करना एक मेव कर्त्तव्य समझा ।

वीरता और साहस सीता जी के जीवन की विशेषता है । श्री राम का जीवन भी अत्यन्त शुद्ध और निर्मल था । पत्नी के वन चले जाने के बाद उन्होंने भी दुनियां के जितने भी आराम थे, छोड़ दिये । वो कुश (घास) पे सोते, जमीन पर सोते, नंगे पैर चलते और साधु पुरूष जैसे कपड़े पहनते थे । ये सब कहानियाँ नही हैं । ये सत्य है । अपने भारत वर्ष में और दुनियां में भी ऐसे अनेक लोग हुए हैं जिनका जीवन एक बहुत ऊँची किस्म का रहा और उन्होंने कभी छोटी, ओछी बातें सोची नही । पर ये सारे आदर्श हमारे देश में होने के कारण हमारे अन्दर ढोंग आ गया कि हम राम को मानते हैं । हमने राम का भजन कर लिया और हो गया । तो ये एक तरह का ढोंगीपना हो गया । जिन देशों में ऐसे आदर्श नही हैं वो कोशिश करते हैं कि हम आदर्श कैसे बने हम अपने को ठीक कैसे करें ?

हमारे अन्दर अगर श्री राम हैं तो उनका प्रकाश हमारे चित्त में क्यों नही आ सकता । हम क्यों नहीं इसे प्राप्त कर सकते हैं ? हम उस स्थिति को जानने की कोशिश क्यों न करें जिस स्थिति में श्री राम इस संसार में आए । एक सहजयोगी को ये विचार कर लेना चाहिए कि श्री राम कि स्थिति अगर हम प्राप्त कर लें तो अपने यहाँ का राजकारण ही खत्म हो जाएगा । अपने यहाँ की जितनी परेशानियाँ हैं ये सब खत्म हो जायेंगी । अपनी प्रजा का वे बिल्कुल निरपेक्ष भाव से, विदेह रूप से लालन - पालन करते थे । और सब तरह की अच्छाइयाँ लोगों में आएं । हर स्त्री को इन गुणों की शिक्षा हो जाए, उनकी उन्नति हो जाए, उनके अन्दर महान आदर्शों की स्थापना हो, इसके लिए उन्होंने पूरा समय प्रयत्न किया और इसीलिए अपना जीवन बहुत आदर्शमय बनाया । स्वयं आदेशों पर न चलने वाले व्यक्ति के प्रति कभी श्रद्धा हो ही नहीं सकती, और आप उसके गुण ले ही नही सकते । बहुत से लोग हमेशा कहते हैं कि हम इनको मानते हैं, हम उनको मानते हैं लेकिन मैं देखती हूं वो उसके बिल्कुल उल्टे होते हैं । राम भक्त कहलाने वाले लोगों की दस दस बीबियाँ होती हैं । तो उन्होंने राम को कैसे माना ?

इसी प्रकार जीवन में एक सहजयोगी का कर्त्तव्य है कि वह भी इन देवताओं के प्रकाश को अपने चित्त में लाए । हर चीज की ओर उसी तरह से देखना चाहिए जैसे श्री राम । श्री राम क्या करते ? ऐसा

अगर प्रश्न आता तो सीता जी क्या करती ? सीता जी का क्या बर्ताव होता ? इस तरह से अगर वो सोचे तो स्त्री गृह लक्ष्मी हो ही जायेगी । आप तो जानते हैं कि सीता जी ने अनेक जन्म लिए । गृह लक्ष्मी के स्थान पर वे विराजती है । फातिमा रूप में वे घर में घूंघट में, पर्दे में रहती थी पर सारा धर्म का कार्य उस शक्ति ने किया । आप घर में रहकर के भी ये कार्य कर सकते हैं । अपने बाल बच्चे, जान पहचान ईष्ट मित्र सबमें आप सहजयोग फैलायें । लेकिन पहले आपमें ये चीज आनी चाहिए । उसके बाद ये समाज में भी आ सकती है । पर पहले औरतों का सीता जी जैसे शुद्ध आचरण होना चाहिए ।

शुद्ध आचरण में पहली चीज् है ममता और प्यार । अपने पति के साथ वो जब जंगलों में रहती थी तो कभी उन्होंने ये नही कहा कि मेरा पति पैसा नही कमाता, वो नही करता (जैसा हमारे यहाँ औरतों की आदत होती है) ये नही खरीदता, वो नही खरीदता । वो जंगल में है तो मैं भी जंगल में हूँ । वो जो खाते है वो मैं खाती हूं । उनके खाने से पहले मैं खा लूं ऐसा कभी नही करते । वो खा लें, उनको खाना खिला दें, अपने देवर को खाना खिला दे उसके बाद मैं खा लूंगी । आज औरतें ये शिकायत है कि हमारे ऊपर बहुत ज्यादा दबाव आ जाता है । स्त्री पृथ्वी तत्व जैसी होती है । इसमें इतनी शक्ति है कि ये बहुत दबाव को खींच सकती है । सारी दुनियां को देखें । कितने फल फूल आदि उत्पत्तियाँ पृथ्वी दे रही है । इसी प्रकार इस पृथ्वी तत्व के जैसे ही हम स्त्रीयाँ है । हमारे अन्दर इतनी शक्तियाँ है कि हम सब तरह की चीज अपने अन्दर समा सकते हैं और अपने अन्दर से हमेशा प्रेम की वर्षा कर सकते है । ये हमारे अन्दर परमात्मा ने शक्ति दी है । स्त्री शक्ति स्वरूपिणी है, शक्ति का सागर है और उसके द्वारा ही पुरूष अपने कार्य को करता है । एक जैसे अन्तः शक्ति (पोटेन्शियल) गति-मूलक (काइनैटिक) । अन्तः शक्ति, स्त्री है और गति मूलक पुरूष । पुरूष ज्यादा दौड़ सकता है उसे देख यदि औरत भी दौड़ने लग जाए तो ठीक नही । उसको तो बैठने की जरूरत है । दोनों की क्रियाएँ अलग - अलग है । और उस क्रिया में दोनों को समाधान होना चाहिए । दोनों ही क्रिया में स्त्री बहुत पनप सकती है और जब समय आता है तो स्त्री पुरूषों से भी ज्यादा काम करती है । महाराष्ट्र में तारा बाई नाम की सत्रह साल की एक विधवा थी, शिवाजी की वो छोटी बहू थी । सब हार गए औरंगजेब से और इसने औरंगजेब को हरा दिया । सत्रह साल की उमर में, और उसकी कब्र बना दी औरंगाबाद में । तो आप समझ सकते है कि जब औरत अपनी शक्ति को पूरी तरह से समोह लेती है तो वो बड़ी प्रचंड हो जाती है । और अगर वो ऐसे इधर - उधर अपने शक्ति को फेंकती रहे, कही लड़ने में गई, कही झगड़े में गई, बुराई में गई, ओछेपन में गई, तो उसकी शक्ति सारी नष्ट हो जाती है । स्त्री जो है वो इतनी शक्तिशालिनी है कि वो चाहे तो पुरूषों से कही अधिक कार्य कर सकती है । पर सबसे पहली चीज् है वो अपनी शक्ति का मान रखे । तो स्त्री का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है, गौरव पूर्ण है । स्त्री बहुत लज्जाशील और बहुत सूझ बूझ वाली होनी चाहिए । जैसे आदमी लोग गाली बकते हैं । बकने दें । औरतें नहीं बक सकती हैं । आदमी लोग का बहुत झगड़ा हुआ तो मार पीट कर लेंगे । औरतें नही करेंगी । उनका कार्य शान्ति देने का है, इनका कार्य है सुरक्षण का । इनका काम है लोगों को बचाने का । जैसे कि एक ढाल है । ढाल तलवार का काम नही कर सकती । पर ढाल बड़ी कि तलवार । ढाल ही बड़ी है । जो तलवार का वार सहन कर ले वो बड़ी कि तलवार बड़ी ? तलवार भी टूट जाएगी पर ढाल नही टूटती । इसलिए औरतों को अपनी शक्ति में स्थित होना चाहिए । इस शक्ति की सबसे बड़ी धुरी है नम्रता । नम्रता पूर्वक अपनी शक्ति को अपने अन्दर समा लेना चाहिए । सहजयोग में ये कार्य कठिन नही । मैं देखती हूं कि बहुत सी सहजयोगिनी

औरतें इतनी बकवास करती हैं । कहीं जाएँगी तो आदमियों से बक - बक करेंगी । तो आदमियों से ज्यादा बात करने की कोई जरूरत नहीं । बेकार की बकवास करने की जरूरत ही क्या है ? औरतों में भी बेकार की बकवास करने की कोई जरूरत नहीं । सहजयोग में मैंने देखा है कि जैसे आदमी लोग सीखते हैं ऐसे औरतों को भी सीखना चाहिए । सहजयोग क्या है ? इसके चक्र क्या है ? कौन से चक्र से आदमी चलता है ? कौन से चक्र से उसकी क्या दशा होती है ? इसका पूरा ज्ञान होना चाहिए । ये सब आदमी सीखेंगे तो औरतें पीछे रह जाएँगी । औरतों को भी ये सब सीखना चाहिए ।

पुरूषों की बात कहते हुए श्री राम चन्द्र का आदर्श हमारे सामने आ जाता है । मुझे लगता है कि इस मामले में मुसलमानों ने हमारे ऊपर बड़ा गजब किया हुआ है । मैं उनको बुरा नहीं कहती । उनके देश में ये बात नहीं है । जैसे अगर आप रियाद जाएँ तो कोई मुसलमान आपके ऊपर आँख उठाकर नहीं देखेगा । कोई औरत होगी, उसकी बड़ी इज्जत करेंगे । रास्ते से अगर कोई औरत जा रही है तो वो मोटर रोक लेंगे । वहाँ औरतों की इतनी इज्जत होती है । और हमारे यहाँ इनका ऐसा उलटा असर पड़ा है कि हम लोग सोचते हैं कि औरत एक उपभोग की वस्तु है । हर औरत की तरफ देखना चाहिए । हर स्त्री की ओर नजर डालना महा पाप है । और सहजयोग में निषिद्ध माना जाता है । इससे आपकी आँख खराब हो जाएंगी । सहजयोग में तो और भी नुकसान हो जाएगा । अगर वो नहीं हुआ तो अन्धे भी हो सकते हैं । जब आँखें इधर - उधर घूमती रहें तो इससे सबसे बड़ा नुकसान जो है वो आपका चित्त है । आपका चित्त, इधर - उधर विचलित हो रहा है । तो चित्त अगर विचलित हो गया तो आत्म साक्षात्कार का क्या फायदा होगा ? अगर चित्त एकाग्र नहीं होगा तो वो कार्यान्वित नहीं हो सकता । एकाग्र चित्त ही कार्यान्वित होता है । एकाग्रता को साध्य करना चाहिए । विदेश में ये बिमारी आदमिओं को बहुत ज्यादा है । औरतों को भी है । जो विदेशी सहजयोगी हैं वो उसे बहुत अच्छी बात नहीं समझते । मैंने कहा तुम लोग सिर्फ जमीन की तरफ देख के चलो और तीन फुट से ऊपर देखने की जरूरत नहीं । तीन फुट तक सब अच्छी चीजें दिखती हैं । फूल, बच्चे सब तीन फुट तक होते हैं । इस तरह से अपने चित्त को वश में करना चाहिए । श्री राम का मान यदि आपके मन में है तो आपको उनके जैसे अपने चित्त को वश में करना चाहिए । अपनी पत्नी से भी यही समझाना चाहिये कि तुम शक्ति हो और हम तुम्हारी इज्जत करते हैं । पर तुम्हें उसके योग्य भी होना चाहिए । जैसे "यत्र नार्या पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवताः" अर्थात् जहां स्त्री पूजी जाती है वहीं देवता रहते हैं । पर वो पूजनीय भी होनी चाहिए । किसी गन्दी औरत, दुष्ट या राक्षसी स्वभाव की औरत की कोई पूजा करेगा क्या ? ये भी जान लेना चाहिए कि ये हमारी बच्चों की माँ है । गर पति अपनी औरत को बच्चों के सामने डाँटना फटकारना शुरू कर दे, उसकी कोई इज्जत न रखे तो कभी भी बच्चे उसका मान नहीं करेंगे । स्त्री को भी पति का कभी भी अपमान नहीं करना चाहिए । औरत चाहती है कि मेरा चले, आदमी चाहता है मेरा चले । आदमी को चलाना अगर औरत को आ जाए तो कभी झगड़ा न हो । लेकिन ये समझ लेना चाहिए कि आदमी को चलाना बहुत ही आसान चीज है क्योंकि बिल्कुल बच्चों जैसे होते हैं । उनका स्वभाव बच्चों जैसा होता है भोले भाले होते हैं । उनको बेकार की बातों से परेशान करने से आप उन्हें चला नहीं सकते । उनको भी बच्चों जैसे माफ कर दिया जाए आदमी बाहर जाते हैं, सबसे लड़ाई झगड़ा करते हैं । घर में आकर बीवी पे नहीं बिगड़ेंगे ? बाहर वालों पे बिगड़ेंगे तो मार ही खायेंगे । चलो बिगड़ गए तो क्या है । इस तरह स्त्री की भावना पति की तरफ नहीं होगी तब तक आपस में प्यार व आनन्द नहीं आ सकता । लेकिन पति को भी

चाहिए अपनी पत्नी को क्या चाहिए क्या नही चाहिए इसका विचार रखें । लेकिन ये नही कि पत्नी कुछ गलत बात बता रही है । कोई गलत सलाह दे, उसपे जरूर पति को कहना चाहिए ये गलत है ये नही करना । लेकिन छोटी - छोटी बातों पर झगड़ा करने की कोई जरूरत नही । और ये सहजयोगियों को बिल्कुल नही शोभा देता । मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि सहजयोगी भी आपस में लड़ते रहते हैं । दो सहजयोगी एक स्थान पर ठीक से नही रह सकते । मैं तो सारे संसार को कह रही हूं प्रेम से रहना है तो हम सब कैसे प्रेम से रहेंगे बताओ । तो पहली चीज् है कि पति को पूरी तरह पत्नी के प्रति जागरूक रहना चाहिए और ये जान लेना चाहिए कि सारे संसार की औरतें जो हैं सबके लिए माँ बहन के बराबर है सहजयोग में आकर भी यदि व्यक्ति की दृष्टि स्वच्छ नही हुई तो वो अभी सहजयोगी नही है । हमारे संस्कृति की जो विशेषता है कि स्त्री पुरूष का आपस में मेल जोल बस भाई बहन का होना चाहिए । लेकिन ऐसा नही होता । मैं देखती हूं फौरन कोई औरत हे बक - बक करना शुरू कर देगी । औरतों के साथ नही बैठेगी । आदमियों के साथ बैठेगी । ऐसे कुछ आदमी भी होते हैं स्त्रीलम्पट । उन्हें औरत दिखाई दी लग गए उसके साथ । कोई उनको अपना आत्म सम्मान ही नही होता है । और इसको वो पुरूषार्थ समझते हैं । अरे भई श्री राम तो पुरूषोत्तम हैं, वे पुरूषार्थी है । जो बिल्कुल ही पाताल में हैं वो भी अपने को पुरूषार्थी समझते हैं । या तो फिर श्री राम को मत मानो । एक शैतान को मानो । अगर श्री राम को मानते हो तो उनके आदर्शों पर चलो । और इसी कारण अपने यहाँ अपने बच्चे भी खराब हो रहे हैं, औरतें भी खराब हो रही हैं फिर भी भारतीय संस्कृति को औरतों ने बहुत सम्हाल लिया है । अगर अमेरिकन जैसी औरतें होती तो आपको सब पहुंचा देती ठिकाने । अगर आदमी की दो तीन शादियाँ हो गई तो वो झोली लेके घूमता है । और औरत की दो तीन शादियाँ हो गई तो वो महल खड़े कर देती है वहां । पर वहां है क्या ? वहाँ के समाज की ही अवस्था क्या है ? बच्चे घर छोड़कर भाग जाते हैं । अपने हिन्दुस्तान की औरतों की ये विशेषता है कि वो अपने घर को सम्हालती है । बच्चों और पति को सम्हालती हैं । पर ये चीज् बदल रही है । वो भी देख रही है कि अगर हमारा आदमी ऐसा है तो हम क्यूं न करें । वो अगर दस औरतों के साथ दौड़ता है तो हम पन्द्रह आदमियों के साथ जाएँगे । वो गन्दे काम करता है तो मैं उससे पहले नर्क में जाऊँगी । धर्म की धुरी स्त्रीयों के हाथों में है । स्त्री को संवारना है, स्त्री को ही पति को धर्म के रास्ते पर लाना है । समझा बुझाकर के उसको अपने पास रखना है । ये स्त्री का बड़ा परम कर्त्तव्य है । उसके अन्दर ये शक्ति है । अगर वो स्वयं धर्म पर बैठी हुई, और धर्म में सबसे बड़ा धर्म है क्षमा । क्षमा करना अगर स्त्री में न आए तो वो कोई सा भी धर्म करे उससे फायदा नही । पहली चीज् उसमें क्षमा होनी चाहिए । बच्चों को क्षमा करना, पति को क्षमा करना घर के नौकरों को आश्रय देना स्त्री का कर्त्तव्य है ।

तो कुछ ऐसा आ जाता है जो हम कार्य कर रहे हैं ये राम भी नही कर सकते थे कृष्ण भी नही कर सकते थे, इसामसीह भी नहीं कर सकते थे । अगर राम होते वो सब को मार डालते कि तुम बेकार हो । तुम अधर्मी हो, स्त्रीलम्पट हो । कृष्ण आते तो वो सुदर्शन चक्र चलाते, वो भी गड़बड़ हो जाती । ईसा आते तो अपने को सूली पर चढ़ा देते । ये तो माँ ही कर सकती है । उसके अन्दर प्यार की शक्ति इतनी जबरदस्त है कि कोई भी चीज् हो उसे वो प्यार की शक्ति के सहारे पार कर देती है । वो सब चीज् उठा लेती है और उसके तरीके ऐसे प्यारे होते है कि फिर बच्चें उसको बुरा नहीं कहते । कोई बात हो गई, गड़बड़ हो गई तो माँ ही जानती है किस तरह से डाँटना । क्योंकि बच्चे जानते हैं कि माँ में प्यार है । वो हमारे हित के लिए

कहती है । वो उसका बुरा नही मानते । गर बाप डांट दे तो हो सकता है बच्चे उनसे मुंह मोड़ लें । माँ का प्यार तो निर्वाज्य है वो कुछ नही चाहती अपने लिए । वो ये चाहती है मेरे बच्चे ठीक हो जाएँ । मेरी सारी शक्तियों को प्राप्त करें । अपने अन्दर जो भी कुछ अच्छा है सब प्राप्त करें । ऐसे अगर माँ समझें तो बच्चे ठीक हो जाएँ । पर बहुत सी माताएं बहुत चुस्त होती हैं । सब चीज में घुसते जाएँगी । सब चीज में बोलने जाएँगी । उसका पति तो बेचारा चुपचाप बैठा रहेगा ये देवी जी सामने खड़ी होंगी । ऐसे अगर होता है तब बच्चे खराब हो जाते है । तब ऐसे औरतों को ऐसे बच्चे पैदा होते हैं जो बहुत जज्बाती और हानीकारक भी हो सकते हैं । स्त्री को पीछे रहना चाहिए । और पति को आगे रखना चाहिए । ठीक है जो कुछ भी है पति करे पीछे से उसकी मदद कर दे । उसकी शक्ति का स्रोत स्त्री ही है । ये समझ लेना चाहिए कि एक स्त्री को कितना शुद्ध होना चाहिए । कितनी मेहनत करनी चाहिए । आप कहेंगे कि माँ सब स्त्रियों पर छोड़ते हैं, क्योंकि मैं जानती हूं आप शक्तिशाली हैं । मैं जानती हूं हमारे अन्दर बड़ी शक्तियाँ है, क्योंकि मैं माँ हूं । देखिये मेरे ऊपर सबने छोड़ दिया कि आप सब लोगों को पार करो । इतनों की बिमारियाँ ठीक हो गई । ऐसे किसी ने काम किए थे ? एक अहिल्या का उद्धार कर दिया सो हो गया । उसके बाद किसका उद्धार किया ? ईसामसीह ने कुल मिलाके इक्कीस लोगों को ठीक किया । दुनियां भर में घूमो फिरो, सबका ये करो, वो करो, सब चल रहा पर कुछ नही लगता क्यूंकि वो शक्ति है प्यार । वो प्यार की शक्ति मेरे से आगे दौड़ती है । मैं बाहर निकलने से पहले सोचती हूं बन्धन ले लूं लेकिन भूल जाती हूं और जैसे किसी की परेशानियां सामने आती हैं, मैं अन्दर खीच लेती हूं । तो प्यार ऐसा है कि वो अपने आप ही कार्यान्वित करता है । तो मैं नही बुरा मानती । जो भी हो रहा है ठीक है । तकलीफ होगी, तो होने दो, कोई हर्ज नही, ये सब माँ ही कर सकती है और इसलिए विशेष मेरा आपके तरफ रूख है कि आप समाधान और स्थिरता के साथ कार्य करें । ओर पुरूषों को भी चाहिए कि अब अपनी औरतों की भी पूरी सहायता करे, उनको समझे, उनका आदर करें और जब तक रथ के पहिए एक जैसे नही होते हैं तो रथ घूमता ही रहता है । आगे नही जाएगा । दोनों एक ही जैसे होने चाहिए पर एक बाएं को है, एक दायें को है । बाएं वाला दायें में नही लगेगा और दायें वाला बायें में नही लगेगा । इस तरह ये दो तरह के चक्के हैं और ये दोनों तरह के चक्के चल रहे हैं इसलिए क्यूंकि ये एक जैसे भी हैं और एक जैसे हैं भी नही । इसी प्रकार हमारे जीवन में भी होता है ।

श्री राम चन्द्र जी ने सिर्फ पति पत्नी का ही विचार नही किया । बच्चों का या अपने कुटुम्ब व्यवस्था का ही विचार नही किया, अपने भाई, बहन, माँ बाप सबका विचार किया । जैसे एक मनुष्य को होना चाहिए । और उसके बाद उन्होंने समाज का भी विचार रखा । जन, देश राज्य का विचार रखा । जैसे कि एक मनुष्य की सारी गतिविधियाँ होती हैं उन सारी गतिविधियों में उन्होंने दिखाया कि मनुष्य को किस तरह से होना चाहिए । जो मनुष्य अपनी पत्नी को इतना प्यार करता था और वो जानता था कि वो सम्पूर्णतया शुद्ध है उसको उन्होंने त्याग दिया । आजकल पत्नी के लिए ये बनाना है ये देना है और अगर कहा जाए कि गरीब को थोड़ा पैसा दो तो नही देंगे । नही तो आपने बच्चों को दो । अपने भाँजों को दो । ये राजकीय लोगों की बिमारी है । और इन्होंने अपनी वो पत्नी का जो स्वयं साक्षात् देवी स्वरूपा अत्यन्त शुद्ध थी उसका तक त्याग कर दिया । हमें सोचना चाहिए कि ये हमारा महत्व है, रिश्तेदारी है । विदेश में पहले पति पत्नी का कुछ ठीक नही होता । अब जो ठीक हो गया सहजयोग में तो वो पत्नी सब कुछ हो गई । हमारे यहाँ कम से कम चार पाँच लीडर पत्नी के वजह से निकल गए । क्यूंकि पत्नी ठीक नही हुई, पति ठीक थे ।

पत्नी ने पढ़ा पढ़ा करके बिचारों का सत्यानाश कर दिया । यहाँ भी मैं कहूँगी कि पत्नी को समझना चाहिए कि सहजयोग क्या है । और उसमें अपना क्या स्थान है । और पति को भी पत्नी से ऐसे मामले में जरा सा भी नही सहमत होना चाहिए । उससे कहना चाहिए कि तुम बहुत ज्यादा बोलती - दौड़ती हो । चुप बैठो । तुम किसी काम की नहीं हो । तुम्हारे चक्र ठीक नही । जब पति इस तरह उसके साथ व्यवहार करेगा तभी तो न वो ठीक होगी । सहजयोग में आने पर भी अपनी कुछ सूक्ष्म खराबियां चिपक जाती है । उधर आपको बहुत अच्छे से ध्यान देना चाहिए ।

आज के राम के त्यौहार पर हमें हनुमान जी का विशेष विचार करना चाहिए । हनुमान जी किस तरह से श्री राम के दास थे और किस तरह से उनकी सेवा चाकरी में लगे रहते थे । और हर समय उनके ही सेवा में रहने से ही वो जानते थे कि उनका पूरा जीवन सार्थक हो जाएगा । उनके जैसे वृत्ति भी सहजयोग में हमें अपनानी चाहिए । इसका मतलब ये नही कि आप मेरे लिए खाना बना बनाकर भेजे । क्योंकि मैं तो खाना खाती नही हूँ और मुझे खाना बना बना करके और परेशानी में डालते हैं । क्या चीज चाहिए ? सेवा करने में तत्परता । हनुमान जी क्या खाना बनाकर भेजते थे । श्री राम चन्द्र जी के लिए ? दिल्ली वालों ने मुझे इतना परेशान किया है खाना बना बना करके । तो मैंने शर्त लगा दी कि तुम अगर खाना बनाओगे तो मैं आऊँगी नही । जो चीज करनी है वो करो । ये तो बेकार की चीज है कि जो आदमी खाना नही खाता उसे जबरदस्ती आप खाना खिला रहे है । कोई चीज की जरूरत नही तुम्हारी माँ को । सारा भरा पड़ा हुआ है । मैं तंग आ गई हूं । इतना मैं कहती हूं मेरे लिए कुछ चीज मत लाओ । बस फूल ही लाओ । और फूल भी जब लगाओगे तो हजार रूपये के मत लगाओ । जो कुछ करना है वो संतुलन में । जैसे माँ को पसन्द है । हनुमान जी से सीखना है कि सेवा में तत्परता क्या होती है । मेरी तो ऐसे कोई खास सेवा नही । पर जो मेरी सेवा करनी है तो सहजयोग की सेवा करो । कितने लोगों को आपने साक्षात्कार दिया । कितनों को आपने पार कराया ? जैसे कोई आ जाता है प्रोग्राम में "तेरे अन्दर ये भूत है" बस उसके पीछे पड़ गये । वो भाग गए । मैंने एक साहब से पूछा आप पार हो गए थे आप सहजयोग से क्यूं भाग गए । कहने लगा किसी सहजयोगी ने बताया तुम्हारे अन्दर तीन भूत बैठे हैं । मैंने कहा आपने विश्वास क्यों कर लिया । कहने लगे वो तो वहां के बड़े महारथी लग रहे थे । "राम काज करने को तत्पर" । काज कौन सा है हमारा ? मेरा काज है सहज योग । मेरा कार्य है सहजयोग । कुण्डलीनी का जागरण करना । लोगों को पार करना । उनके अन्दर शक्ति लाना, प्रेम लाना, प्रेम की बातें करना । उनसे सहजयोग के बारे सारे चक्र आदि का वर्णन करना । उनको जो चाहिए सो समझाना । इसका मतलब ये नही कि भाषण देना शुरू कर दें । दो - दो घन्टे भाषण देते हैं फिर हम आपका भाषण भी नही सुन पाते । लोगों को सहजयोग पर भाषण देना बहुत अच्छा लगता है । उनका माईक ही नही छूटता । एक बार पकड़ लिया तो छूटता नही । ये भी एक नई बिमारी है । तो समझ लेना चाहिए कि काहे को इतना भाषण देना माँ के इतने भाषण हैं वो ही सुन लें । तो अब जब भी आप लोगों का कोई प्रोग्राम हो उसमें आप चाहें तो एक वीडियो लगा दो या मेरा एक टेप सुना दो । उसके बाद एक कागज पेन्सल दे दो । जिसपे तुमको जो कुछ लिखना है लिखो । कोई प्रश्न हो बता दो । और उसके बाद में उनकी जाग्रती कर दी और उनसे कहना कि अगली बार आपको जो कुछ समस्या हो लेके आईये । किसी को बिमारी है , तकलीफ है । अब ऐसे भी लोग हैं एक आदमी है वो कलकत्ते भी आएगा किसी को ठीक करने । अब उसे रूस बुला रहे हैं । एक ही आदमी हनुमान जैसे दौड़ता रहता है इधर से उधर । आप सब लोग ठीक कर

सकते हैं । सब औरतें ठीक कर सकती हैं । पर कोई हाथ नही लगाता । पता नही क्या बात है कि अभी तक एक ही आदमी सारे हिन्दुस्तान में है जो लोगों को ठीक कर सकता है । लण्डन से 15-20 लोग हैं जो लोगों को ठीक करते हैं । ये ठीक करने का तरीका क्या है ये सीख लेना चाहिए । और बन्धन लेकर के ठीक करना चाहिए लोगों को । उसके लिए क्या आप बाहर से बुलाएंगे । सहजयोगियों को । आप बैज लगाकर घूमते हैं, आप ठीक भी नही कर सकते ? फिर बैज उतार दो । अपने को भी नही ठीक कर सकते तो दूसरों को क्या ठीक करना । तो सब को ठीक करने की सब को शक्ति दे दी गई है । उसको आप लोग सीखें । उसमें निपुण बने । बजाय कीकलकत्ते कोई आए दूसरों को ठीक करने । इसमें हिम्मत की जरा सी बात है, कुछ नही होने वाला तुमको । तुम न तो बिमार हो सकते हो न कुछ हो सकता है । जो लोग जितना सहजयोग में कार्य करेंगे उतने गहरे उतरेंगे । जैसे पेड़ जितना फैलेगा उतना ही गहरा उतरेगा । सहजयोग में और अवतरणों में बड़ा भारी फर्क है कि पहले उन्होंने समाज्किता से आध्यात्म नही किया था । ये शक्तियां किसी को दी नही थी । समाज के लिए मिली नही थी । एक आध आदमी को शक्ति मिली थी । जैसे कि राजा जनक ने निचिकेता को आत्म-साक्षात्कार दिया । लेकिन अब तो आप सबको ये शक्तियां प्राप्त हैं । बस इसको ऐसा बढ़ाईये कि आपको किसी भी चीज् की जरूरत ही न रह जाए । आप अपनी तबीयत ठीक कर लीजिए दूसरों की तबीयत ठीक कर लीजिए । आप सहजयोग समझ लीजिए । सब कुछ आपके पास है । लेकिन अभी भी आपका चित्त पता नही कहाँ घूम रहा है । अभी आपने इस चीज् को पकड़ा ही नही ।

श्री राम के ही माध्यम से हमारे विचार बदल सकते हैं । उन्ही के माध्यम से हमारा स्वभाव बदल सकता है क्यूंकि हमारे लिए वो एक आदर्श हैं । उनके आदर्श तक पहुंचने के बाद ही आप दूसरे आदर्शों तक पहुंच सकते हैं क्योंकि वो मनुष्य के आदर्श हैं । कितनी बड़ी चीज है कि परमात्मा मनुष्य बनकर इस संसार में आए कि इनके लिए हम आदर्श बन जाएँ । उन्होंने सब विपत्तियाँ उठाई, आफतें उठाई दिखाने के लिए कि कोई सी भी विपत्ती और आफत आती है तो मनुष्य को अपना धर्म नही छोड़ना चाहिए । विश्व धर्म नही छोड़ना चाहिए और जो आपका योग है उसमें बंधे रहना चाहिए ।

आप सबको हमारा अनन्त आशीर्वाद ।